युगवार्ता
Yugvarta | 2024-05-01 | Page- 45
yugvarta.hindusthansamachar.in

'पुस्तकालय में सभ्यता और संस्कार बनते हैं'

साहित्य अकादेमी ने 23 अप्रैल विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर पुस्तकों का महत्व विषयक परिसंवाद का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता नवतेज सरना ने की। परिसंवाद में अदिति महेश्वरी, धनंजय सिंह, मैत्रेयी पुष्पा, मेजर अखिल प्रताप, मोलिश्री, संजय श्रोत्रिय, शालीना चतुर्वेदी, स्मिता सहगल, सुजाता शिवेन, सुमित्रा गुहा तथा सुपर्णा देव ने अपने-अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत अंगवस्त्रम एवं साहित्य अकादेमी के प्रकाशन भेंट करके की। अपने वक्तव्य में प्रकाशक अदिति महेश्वरी ने कहा कि हमारे देश में अभिव्यक्ति की आजादी के चलते लेखन की विविधता सबसे अधिक है। धनंजय सिंह ने कहा कि किताबें हमारा व्यक्तित्व बदलती हैं और वह समय की विराट परिधि को भी लाँघती हैं। पुस्तकों का महत्त्व अवर्णनीय और असीमित है। मैत्रेयी पुष्पा ने कहा कि पुस्तकें समाज के नाम लिखे पत्र हैं, जिनमें वास्तविक सच्चाइयाँ होती हैं। साहित्य रंक से राजा बनाता है और निडर तथा निर्भीक भी। कथक नृत्यांगना शालीना चतुर्वेदी ने कहा कि हमारे लिए कथा बताने का मतलब ही कथक हैं। अनुवादक सुजाता शिवेन ने कहा कि किताबें हमारी भाषा को परिमार्जित करती हैं और हमारे विचारों को बदलती हैं। अंत में, परिसंवाद के अध्यक्ष , पूर्व राजनयिक एवं लेखक नवतेज सरना ने कहा कि सभ्यता और संस्कार पुस्तकालय में ही बनते हैं। अतः हमें पुस्तकों को बचाने के लिए व्यवस्थित ढंग से काम करना होगा। अकेले साहित्य अकादेमी यह दायित्व नहीं उठा सकती। पुस्तकों को बचाए रखने के लिए उन्होंने विभिन्न सुझाव भी दिए।

Powered by iDocuments